NOTES

जो दिल पर सितम की चोट सह सकता है
तूफ़ान में जो बेख़्तर बह सकता है
ख़ातिर में जो लाता नहीं बेचैनी को
दुनिया में वही चैन से रह सकता है।

—

वक़्त पड़ने पर हुई महसूस तन्हाई बहुत
शहर में थी यूँ तो लोगों से शनासाई बहुत
डूबकर हमको उबरने की न मोहलत मिल सकी
अपने ही दिल के समंदर में थी गहराई बहुत।

—

वह जीना क्या जीना जिसमें जीने का अरमान नहीं
अरमान नहीं अरमान कि जिसमें तड़प नहीं तूफान नहीं
तूफान नहीं तूफान कि जिसकी ठोकर में निर्माण नहीं
निर्माण नहीं निर्माण जो फूँके पत्थर में भी प्राण नहीं।

—

तुम्हें ग़ैरों से कब फ़ुरसत
हम अपने ग़म से कब ख़ाली
चलो बस हो चुका मिलना
न तुम ख़ाली न हम ख़ाली।

—

वही कारवां, वही रास्ते,
वही ज़िंदगी, वही मंज़िलें,
मगर अपने-अपने मुक़ाम पर,
कभी तुम नहीं,
कभी हम नहीं!